एक नगर मानवीय गतिविधियों का मुख्य केन्द्र होता है, जो कि अपने आस–पास के क्षेत्र से विशिष्ट संबंध बनाये रखता है । इन गतिविधियों के परिणाम स्वरूप यह अपने स्वयं के कार्य–कलापों को उत्पन्न करता है। अतः यह आवश्यक हो गया है कि आने वाले दशको में नगर के विकास को सुनियोजित स्थिति, इनके योगदान तथा महत्व का अध्ययन किया जावे। साथ ही इसकी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व व्यावसायिक संरचना, भू–उपयोग तथा विकास की प्रवृति एवं प्रगति का भी अध्ययन किया जाये, जिससे योजना मानवीय मानदण्डों के अनुरूप हो सकें।

01. भौतिक स्वरूप एवं जलवायु :–

चूरू राजस्थान प्रदेश के उतर–पूर्व 28'–08' उतरी 74'58 पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। थार रेगिस्तान में बसा होने के कारण यहां की जलवायु लगभग सम्पूर्ण वर्ष गर्म और शुष्क रहती है तथा यहां पर तापमान मे काफी भिन्नता रहती है। यहां पर गर्मियो एवं सर्दियों में औसत तापमान में 37.54' सेन्टोग्रेड से 24.94' सेन्ट्रीगेड से 9.15' सेन्ट्रीगेड तथा न्यूनतम तापमान सर्दियों में 4.4' सेन्ट्रीगेड रहता है। यहां पर अधिकतम तापमान गर्मियों मे 47.2' सेन्ट्रीगेड तथा न्यूनतम तापमान सर्दियों मे 4.4' सेन्ट्रीगेड रहता है। राजस्थान के उतर पश्चिमी भाग में धूल भरी आंधियां आती है, जो िकइस भू–भाग की सामान्य विशेषता है। हवा की दिशाऐं मुख्य रूप से अप्रेल से सितम्बर तक दक्षिण–पश्चिम से तथा अक्टुबर से मार्च तक उतर–पश्चिम और उतर–पूर्व की ओर से होती है। तापमान मे अत्यधिक उतार–चढाव का मुख्य कारण यहां का मौसम गर्म और शुष्क रहना है। यहां मानसून का आना अनिश्चित रहता है। यहां पर औसत वार्षिक वर्षा लगभग 377 मिलीमीटर रहती है। यहां पर औसत आर्द्रता 60 प्रतिशत रहती है।

02. क्षेत्रीय परिपक्ष्य :–

चूरू बीकानेर संभाग के अंतर्गत जिला मुख्यालय है। यह राजस्थान के उतर–पूर्व में तथा बीकानेर संभाग के पर्वू मे स्थित है। यहां पर अधिकतम थार रेगिस्तान स्थित है। जलवायु की अत्यधिक विभिन्नताओं के कारण काफी समय तक पिछडा रहा है। चूरू रेल व सड़क मार्ग से प्रदेश एवं देश के प्रमुख नगरों से जुडा हुआ । वर्तमान मे चूरू मे एक कृषि मण्डी है। यहां से उत्पादन राज्य के अन्य जिलों मे एवं अन्य राज्यों में भी भेजा जाता है। मण्डी में वित निगम का स्टोरेज तथा ट्रक पार्किग इत्यादि प्रमुख सविधाए उपलब्ध है। जो पर्याप्त नही है। इस क्षेत्र में अधिकांशतः दो प्रकार की मिट्टो पाई जाती है पहली क्लेई लोम मिट्टी जो ज्वार, सरसों, गेहू, मक्का एवं नरमा आदि फसलो के लिए अच्छी मानी जाती है। दूसरी बालूई मिटटी मे बारानी फसलें होती है इनमें बाजरा, ग्वार मूंग चना व मोठ आदि फसलों की उपज होती है।

चूरू के लोगो का मुख्य व्यवसाय कृषि आधारित है। यहां से चना,गम आदि से संबंधित कार्य किया जाता है। यहां पर चमडे के जूते,खाघ तेल व ग्वार गम तैयार किये जाते है।

01. ऐतिहासिक :–

प्रारम्भ में चूरू एक ग्रामीण आबादी क्षेत्र था जो कि कालेरा बास के नाम से जाना जाता था। इस आबादी का नाम सन् 1620 में यहॉ के एक जाट मुखिया के नाम पर चूरू रखा गया। कस्बे के विकास एवं महत्व को ध्यान में रखकर यहॉ पर नगर परकाटे का निर्माण किया गया था। तथा सन् 1790 में ठाकुर खुशालसिंह द्वारा यहॉ किले का निर्माण कराया गया। इस सताब्दी के प्रारंभ में समस्त जनसंख्या शहर के परकोटे के अंदर रहती थी। उच्च जाति के लोग किले के नजदीक निवास करते थे तथा नीची जाति बाहरी क्षेत्रों में रहती थी। किला विकास का मुख्य केन्द्र था तथा यहां से शहर के दक्षिण एवं पश्चिम की तरफ सडकों के सहारे की विकसीत हुए। महाराजा श्रीगंगासिंह के शासन काल (1887–1943) में अन्य कस्बों की तरह इस कस्बे का विकास भी नगर परकोटे के बाहर फैलने लगा। इसी समय यहॉ पर रेलवे लाईन बिछाई गयी तथा क्षेत्रीय सडकों का निर्माण किया गया।

इस शताब्दी के अंत तक सिटीवाल को ध्वस्त कर भवनों का निर्माण किया गया। कस्बा तीन तर से उच्च बालू स्तूपों से घिरा हुआ है। सडक एवं बालू के टिब्बों के बीच की खाली भूमि पर आवासीय कॉलोनियों का निर्माण किया गया। बीकानेर राज्य के पुनर्गठन के बाद कस्बे के पश्चिम की तरफ राजकीय कार्यालय, सामान्य अस्पताल तथा पुलिस लाईन आदि का निर्माण किया गया। ऊन मिलें तथा कोल्ड स्टोरेज दक्षिण–पश्चिम की तरफ रेलवे स्टेशन के पास झुन्झनूँ सडक पर स्थापित किये गये। गोदाम, भण्डार गृह तथा 132 के.वी. का विद्युत ग्रिड स्टेशन उत्तर–पश्चिम में भालेरी सडक पर स्थापित किये गये। वर्तमान में शहर की विकास की दिशा दक्षिण पश्चिम, पश्चिम तथा उत्तर–पश्चिम की तरफ है।

02. जन सांख्यिकी :–

चूरू शहर की प्रथम बार जनगणना सन् 1901 में हुई । उस समय की जनसंख्या मात्र 15,567 थी। उसके बाद आने वाले दशको में लगातार जनसंख्या वृद्धि हुई है। भारतीय जनगणना सन् 1981 के अनुसार यहां की जनसंख्या 62070 थी। इसके बाद के दशकों में जनसंख्या लगातार बढती हुई सन् 2001 की जनगणना के अनुसार यह 101853 तक पंहुच गई। चूरू की जनसंख्या की अधिकतम वृद्धि सन् 1941–51 के मध्य 41.66 प्रतिशत हुई तथा न्यूनतम वृद्धि 2.43 प्रतिशत सन् 1901–11 के दशक में हुयी थी । चूरू की उत्तरातर जनसंख्या वृद्धि का मुख्य कारण यहॉ पर औद्योगिक विकास तथा रोजगार के साधनों की

सुविधा का मिलना रहा है। पिछले तीन दशकों में यहां सरकारी व अर्द्ध–सरकारी कार्यालयों की स्थापना हुई। इस कारण कर्मचारियों का आना भी जनसंख्या वृद्धि का एक कारण रहा है। चूरू की जनसंख्या वृद्धि प्रवृत्ति को तालिका– 1 में दर्शाया गया है :–

तालिका–1

जनसंख्या वृद्धि की प्रवृति – चूरू 1901 – 2010

क्रमांक	दशक	जनसंख्या	अन्तर	वृद्धि दर प्रतिशत में
1	1901	15657	–	–
2	1911	16038	381	2.43
3	1921	16932	894	5.57
4	1931	21965	5033	29.72
5	1941	28269	6304	28.70
6	1951	40047	11778	41.66
7	1961	41727	1680	4.20
8	1971	53185	11458	27.46
9	1981	62070	8885	16.71
10	1991	85852	20782	33.48
11	2001	101853	19001	22.93
12	2010 (अनुमानित)	124133	22280	21.87

स्त्रोत – भारतीय जनगणना एवं विभागीय अनुमान

03. व्यवसायिक संरचना :–

चूरू कस्बे में कार्यशील व्यक्तियों का अनुपात सन् 1991 की जनसंख्या के आधार पर 22.63 प्रतिशत था, जो घटकर सन् 2001 से 22.20 प्रतिशत हो गया। शहर में सन् 1991के आधार पर 18752 व्यक्ति व सन् 2010 में 27498 व्यक्ति विभिन्न कार्यकलापों में कार्यरत थे। सन् 2010 में कुल कार्यशील व्यक्तियों में से 16.68 प्रतिशत प्राथमिक सेक्टर में लगे हुए थे। इस तालिका का अवलोकन करने पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि इस कस्बे पर आधारित व्यापार एवं वाणिज्यिक कार्यों में अधिक व्यक्ति लगे हुए हैं। इसका मुख्य कारण यहॉ पर सिर्फ कृषि पर आधारित क्रियाकलापों का विकास रहा है। चूरू की व्यवसायिक संरचना को तालिका–2 में दर्शाया गया है :–

तालिका–2

व्यावसायिक संरचना – चूरू 1991–2001

क्र. सं.	व्यवसाय	1991		2001 अनुमानित		2010 अनुमानित	
		कार्यशील व्यक्ति	प्रतिशत	कार्यशील व्यक्ति	प्रतिशत	कार्यशील व्यक्ति	प्रतिशत
1	कृषि, खनन एवं तत्संबधी कार्य	3694	19.70	3889	17.20	4587	16.68
2	उद्योग	3094	16.50	3958	17.50	5142	18.70
3	निर्माण	1897	10.12	2713	12.00	3575	13.00
4	व्यापार एवं वाणिज्य	4800	25.59	5880	26.00	7699	28.00
5	यातायात एवं संचार	1668	8.90	2488	11.00	3575	13.00
6	अन्य सेवाएं	3599	19.19	3687	16.30	2920	10.62
	कुल कामगार	18752	100.00	226.15	100.00	27498	100.00

स्त्रोत – भारतीय जनगणना एवं विभागीय अनुमान

04. **विद्यमान भू–उपयोग :–**

चूरू कस्बा लगभग 16 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। वर्ष 2010 में चूरू का लगभग 2439 एकड क्षेत्र विकसित क्षेत्र है। विद्यमान भू–उपयोग की गणना के आधार पर कुल विकसित क्षेत्र का 65.78 प्रतिशत आवासीय, 2.83 प्रतिशत व्यवसायिक, 2.87 प्रतिशत औद्यौगिक, 2.46 प्रतिशत राजकीय, 13.53 प्रतिशत सार्वजनिक एवं अर्द्ध– सार्वजनिक तथा 11.48 प्रतिशत परिसंचरण के अन्तर्गत है। विद्यमान भू–उपयोग वर्ष 2010 को तालिका–3 में दर्शाया गया है :–

तालिका–3

विद्यमान भू– उपयोग संरचना – चूरू 2010

क्रमांक	भू–उपयोग	क्षेत्रफल (एकड में)	विकसित क्षेत्र का प्रतिशत	नगरीयकृत क्षेत्र का प्रतिशत
1	आवासीय	1580	65.78	61.62
2	वाणिज्यिक	69	2.83	2.69
3	औद्यौगिक	70	2.87	2.73
4	राजकीय	60	2.46	2.34
5	आमोद–प्रमोद	50	2.05	1.95
6	सार्वजनिक एवं अर्द्धसार्वनिक	330	13.53	12.87
7	परिसंचरण	280	11.48	10.92
	कुल विकसीत क्षेत्र	2439	100.00	95.12
8	राजकीय आरक्षित	58	–	2.27
9	नर्सरी	55	–	2.15
10	जलाशय	12	–	0.46
	कुल नगरीयकृत क्षेत्र	**2564**	**–**	**100.00**

स्त्रोत – नगर नियोजन विभाग सर्वेक्षण

06.1 आवासीय :–

चूरू कस्बे के विद्यमान भू–उपयोग के अनुसार 1580 एकड भूमी आवासीय प्रयोजनार्थ विकसित हो चुकी है। सन् 2010 की गणना के अनुसार चूरू का औसत जनसंख्या घनत्व 51 व्यक्ति प्रति एकड है, तथा औसत आवासीय घनत्व 79 व्यक्ति प्रति एकड है। पुराने शहर की आबादी का औसत जनसंख्या घनत्व लगभग 200 व्यक्ति प्रति एकड है। विकसित आवासीय क्षेत्र मुख्य रूप से नगर पालिका एवं निजी निवेशकर्ताओं द्वारा विकसित की गई योजनाओं के रूप में स्थित है। चूरू कस्बे में उच्च घनत्व वाले आवासीय क्षेत्रों का विकास प्रमुखतः शहर के आंतरिक भागो में यथा पुराने किले के अदर तथा घंटाघर क्षेत्र में हुआ है। शहर के बाहरी क्षेत्रों में कम घनत्व पाया जाता है।

06.1 (अ) आवासन :–

भारतीय जनगणना के अनुसार चूरू शहर में 14522 परिवार12652 मकानों में निवास करते थे जबकि वर्ष 2010 में लगभग 20660 परिवार लगभग 17578 मकानें में रह रहे है। अतः 3082 परिवार ऐसे है जिनके पास अभी भी स्वयं का आवास नही है।

06.1 (ब) कच्ची बस्तियां :–

चूरू में राजकीय भूमि पर कइ कच्ची बस्तीयां विकसित हो गई है। शहर के चारो तरफ कृषि भूमि पर अनाधिकृत निर्माण हो गये है। कच्ची बस्तियों एवं अनाधिकृत कॉलोनियों में मूलभूत सुविधाओं का अभाव है।

06.1 (स) शहरी नवीनीकरण

चूरू शहर का पहला मास्टर प्लान वर्ष 1983–2006 तक के लिए तैयार किया गया था जिसे मार्च, 2012 तक के लिए बढा दिया गया था, लेकिन कच्ची बस्तियों का विकास अभी तक नहीं हो पाया है। भविष्य में नई योजनाएं बनाते समय कच्ची बस्तियों एवं पुराने क्षेत्रों का पुर्नविकास तथा नवीनीकरण किया जावेगा।

06.2 वाणिज्यिक :–

वर्तमान में कस्बे में कुल विकसित क्षेत्र की लगभग 69 एकड भूमि को वाणिज्यिक उपयोग में लिया जा रहा है। चूरू की बढ रही जनसंख्या के लिये मांग व भूमि के कारण वाणिज्यिक क्षेत्रों में अतिक्रमण भी तेजी से बढ रहा है, जिससे इन क्षेत्रों में अतिक्रमण के भारी दबाव के कारण बाजार अव्यवस्थित होते जा रहे हे। वाणिज्यिक क्षेत्र मुख्य रूप से गुदडी बाजार, कटला बाजार, एवं उतरादा बाजार नाम से जाने जाते है। ये बाजार क्षेत्र रेलवे स्टेशन, एवं पुराने बस स्टैण्ड के पास विकसित हुए है। इन बाजारों में यातायात की बहुत बडी संमस्या पैदा हो गयी है।

चूरू में सुनियोजित मार्केट कॉम्पलेक्स का अभाव है। पुरानी मण्डी में लोहा लकडों, अनाज, सब्जी इत्यादि का व्यापार होने से यह भीड–भाड वाला क्षेत्र हो गया है।

नई धान मण्डी क्षेत्र में पार्किंग एवं दुकानों की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है। चूरू मुख्य रूप से कृषि विपणन बाजार के रूप में विकसित होता आया है। अतः नये व्यवस्थित मार्केट विकसित किये जाने की आवश्यकता है।

06.3 औद्योगिक :–

औद्यौगिक दृष्टि से चूरू पिछडा हुआ है। यहॉ पर पानी की कमी, कच्चे माल की अनुपलब्धता, तथा संसाधनों की कमी के कारण औद्यौगिक विकास नहीं पाया है। मूलभूत सुविधाओं के अभाव में सन् 1981 तक यहॉ छोटे–छोटे घरेलू उद्योगों के अलावा कुछ नहीं था। चूरू में बडे

उद्योगों का अभाव है। यहां पर कुछ लघु उद्योग यथा ऊन की मिल, तेल मिल तथा कास्टिंग उद्योग चूरू–झुंझनू सडक पर एवं रेलवे स्टेशन से थोडा आगे स्थापित हुए है। आंकडों के अनुसार 292 पंजीकृत इकाइयां शहर में कार्यरत है तथा इनके लगभग 2100 कामगार लगे हुए है। कस्बे के विभिन्न मार्गों में चर्म, खाद्य तेल, औद्यौगिक इकाइयां लगी हुई है। चूरू में कुल विकसित क्षेत्र का 70 एकड (2.89 प्रतिशत) क्षेत्र औद्यौगिक प्रयोजनार्थ आरक्षित है। 1991 की जनगणना के अनुसार यहॉ पर कुल कार्यरत व्यक्तियों में से 16.50 प्रतिशत व्यक्ति औद्यौगिक गतिविधियों में कार्यरत थे, जो वर्ष 2010 में बढकर 18.70 प्रतिशत ही हुआ है।

06.4 राजकिय एवं अर्द्ध–सरकारी कार्यालय :–

बीकानेर राज्य के राजस्थान में विलय के पश्चात् सन् 1949 से ही चूरू जिला मुख्यालय के रूप में कार्यरत है। जिसमें से केन्द्र सरकार, राज्य सरकार तथा अर्द्ध–सरकारी कार्यालय है। नगरपरिषद कार्यालय शहर के पश्चिम की तरफ स्थित है तथा जिला कलक्टर कार्यालय, अतिरिक्त जिला कलक्टर कार्यालय, पुलिस अधीक्षक कार्यालय, उपखण्ड अधिकारी कार्यालय एवं अन्य महत्वपूर्ण कार्यालय एक ही परिसर में शहर के दक्षिण–पश्चिम में जयपुर सडक पर स्थित है एवं यही पर जिला न्यायालय स्थित है। जिला परिवहन कार्यालय नगरपिरषद सीमा से बाहर फतेहपुर सडक पर स्थित है। इन कार्यालयो के अन्तर्गत वर्तमान में 60 एकड भूमि उपयोग में आ रही है। सरकारी कार्यालयों की स्थिति को तालिका–4 में दर्शाया गया है :–

तालिका –4

सरकारी एवं अर्द्ध–सरकारी कार्यालय, चूरू – 2010

क्र. सं.	कार्यालय	कार्यालयों की संख्या	कार्यरत कर्मचारियों की संख्या
1	केन्द्र सरकार के कार्यालय	3	101
2	राज्य सरकार के कार्यालय	32	1500
3	अर्द्ध सरकारी कार्यालय	9	799
4	कुल	44	2400

06.5 आमोद–प्रमोद

चूरू में केवल एक शहर स्तर का पार्क स्थित है । जिसका नाम इन्दिरा गांधी पार्क है । इस पार्क की देखभाल नगरपरिषद, द्वारा की जाती है। यह पार्क पानी की कमी के कारण पूरी तरह स विकसित नहीं हो पाया है। शहर में पुराना स्टेडियम लगभग 5.2 एकड क्षेत्रफल में रेलवे स्टेशन के पास सार्वजनिक निर्माण के विश्राम घ के पीछे की तरफ स्थित है, तथा स्टेडीयम में बैठकें एवं खेल आयोजन होते है। कुछ स्थानीय स्तर के खेल मैदान 7 एकड में स्थित है। इनमें वार्ड संख्या 23 में सिंधी पार्क, वार्ड नं. 37 में बालोद्यान, वार्ड संख्या 10 में 2 पार्क तथा अग्रसेन नगर में 2 पार्क स्थित है। आमोद– प्रमोद हेतु कुल 50 एकड क्षेत्रफल उपयोग मं आ रहा है। जो कि कुल विकसित क्षेत्र

का 2.07 प्रतिशत ही है। यद्यपी यह बहुत ही कम प्रतिशत है लेकिन कस्बे में काफी खुले स्थल एवं बगीची स्थित है, जो कि मनोरंजन एवं खेल के काम में आती है। चुरू में पानी की कमी के कारण यहॉ और अधिक पार्क विकसित करना मुश्किल कार्य है।

06.6 सार्वजनिक एवं अर्द्ध–सार्वजनिक :–

चूरू में कुल 330 एकड भूमि सार्वजनिक एवं अर्द्ध– सार्वजनिक प्रयोजनार्थ उपयोग में ली जा रही है, जो विकसित क्षेत्र का 13.66 प्रतिशत है। चूरू में योजना मानदण्डो की वांछित आनुपातिक दृष्टि से सार्वजनिक एवं अर्द्ध–सार्वजनिक सुविधांए यथा शैक्षणिक, चिकित्सा अन्य सामुदायिक सुविधाएं धार्मिक/ऐतिहासिक स्थल, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा श्मशान व कब्रिस्तान आदि हेतु वर्तमान में उपलब्ध सुविधाएं पर्याप्त नहीं है।

2 (अ) शैक्षणिक :–

चूरू उच्च शिक्षा की दृष्टि से अपने आस–पास के क्षेत्रों से अधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, तथा यहां पर शैक्षणिक सुविधाऐं संतोषजनक है। यहां पर केवल एक सहशिक्षण महाविधालय के.एल.लोहिया स्नाकोतर नाम से रेलवे स्टेशन के सामने स्थित है। इस कालेज की वर्ष 1945 मे स्थापना हुई थी, तथा 1972 में यह स्नातकोतर में परिवर्तित हुई। इस कॉलेज के विस्तार के लिए अब जगह उपलब्ध नही ह। एक पॉलिटेक्नीक महाविधालय कलेक्ट्रेट के पीछे स्थित है। एक निजी महाविलधालय नगरपरिषद के पीछे की तरफ है। यहां पर एक जिला नर्सिग प्रशिक्षण केन्द्र भी है। तथा बिसाउ सड़क पर औधोगिक प्रशिक्षण केन्द्र स्थित हैं एवं **मेडिकल कॉलेज कॉलेज हेतु लाईन पुलिस के पास भूमि का चयन कर लिया गया है** चूरू मे अन्य तकनीकी एवं अन्य स्तरीय शेक्षणिक संस्थान की कमी है। अतः बच्चो को उच्च तकनीकी एवं मेडिकल अध्ययन के लिए बाहर जाना पड़ता है। चूरू शहर में विद्यालय स्तर की शिक्षण संस्थाओं का विवरण तालिका–5 मे दर्शाया गया है :–

तालिका –5

शैक्षणिक संरचना, चूरू –2010

क्रं.सं.	स्तर/कक्षा	आयु समुह	विघालय जा रहे छात्रो की संख्या	प्रत्येक विधालय के छात्रो की औसत संख्या	विधालयों की संख्या
01	प्राथमिक विद्यालय (1–5)	6–11	17064	406	35
02	उच्च प्राथमिक विद्यालय (6–8)	12–14	6590	330	20

03	माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय (9–12)	15–18	5218	474	11

स्त्रोत – जिला शिक्षा अधिकारी, चूरू

चूरू में 35 प्राथमिक, 20 उच्च प्राथमिक एवं 11 उच्च माध्यमिक विद्यालय है। उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्यां अधिक होने का कारण यह है कि शहर के आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के छात्र प्राथमिक शिक्षा पूर्ण करके उच्च कक्षा में यहां प्रवेश लेकर अध्ययन कर रहे है।

2.6.6 (ब) चिकित्सा सुविधाएं :–

चूरू में केवल एक सामान्य चिकित्सालय 200 शैयाओ का नगरपरिषद के पास भरतीया हॉस्पिटल नाम से स्थित है। इस अस्पताल के विस्तार की काफी संभावनाए है। यहां एक रेलवे डिस्पेंसरी भी स्थित है। जो कि रेलवे कर्मचारियों के उपचार हेतु ही उपलब्ध है। इसके अलावा शहर मे उतर की तरफ एक एलोपेथिक डिस्पेंसरी तथा बाबला सडक पर ण्क आयुर्वेदिक डिस्पेन्सरी स्थित है। मानक स्तरों (प्रत्येक 1000 व्यक्तियों के लिये चार शैयाएं) के हिसाब से यहॉ पर चिकित्सा सुविधाओं का अभाव है। यहॉ पर गोशाला सडक पर पशु चिकित्सालय भी स्थित है। इसके अलावा यहां पर जे.एन.वी. नेत्र चिकित्सालय, महिला चिकित्सालय गढ परिसर चूरू तथा पुलिस लाईन डिस्पेंसरी स्थित है। तथा बैदों की धर्मशाला के पीछे नई सडक पर एक होम्योपैथिक चिकित्सालय स्थित है।

2.6.6 (स) सामाजिक/सांसकृतिक /धार्मिक /ऐतिहासिक एवं अन्य सामुदायिक सुविधाएं :–

चूरू शहर में तीन सिनेमाघर स्थित है। लेकिन उनमें से केवल दो ही चल रहे है। शहर के क्लब अधिक प्रचलित नहीं है। केवल मनोरंजन क्लब के नाम से चल रहा है। यहां पर 11 पोस्ट ऑफिस एवं एक टेलिग्राफ ऑफिस स्थित है। जिनमें एक जिला वाचनालय राज्य सरकार द्वार संचालित हो रही है। शहर में एक अग्निशमन सेवा केन्द्र बस स्टैण्ड के पास स्थित है। चूरू शहर में एक पुलिस थाना कोतवाली, पुराना गढ के अन्दर, एवं पुलिस चौकी रेलवे स्टेशन के सामने धर्मस्तूप चूरू, एवं पुलिस चौकी पिंजरापोल व्यायामशाला के पास तथा यातायात पुलिस थाना रेलवे स्टेशन के सामने स्थित है।

2.6.6 (द) जनोपयोगी सुविधाएं :–

चूरू कस्बे में जलापूर्ति व विद्युत जैसी आवश्यक सेवाएं संतोषजनक नहीं है। शहर में अभी तक जल–मल निकास एवं ठोस कचरा प्रबंधन की कोई उचित व्यवस्था नहीं है।

2.6.6 (द–1) जलापूर्ति :–

चूरू में जलापूर्ति का मुख्य स्त्रोत इन्दिरा गांधी नहर परियोजना की आपणी योजना के माध्यम से हो रही है जो कि 4 किलोमीटर दूर है। शहर में प्रतिदिन 13500 किलोमीटर जल वितरित किया जाता है। चूरू में पानी की लगभग 85 लीटर प्रति व्यक्ति प्रतिदिन खपत है। शहर में जलापूर्ति के लिए विभिन्न प्रयोजनार्थ जारी किये गये कनेक्शनों को तालिका–6 में दर्शाया गया है :–

तालिका –6

जलापूर्ति, चूरू 2010

क्रमांक	**उपयोग**	**कनेक्शनों की संख्या**
1	घरेलू	18746
2	वाणिज्यिक	360
3	औद्योगिक	18
	कुल	**19124**

2.6.6 (द–2) मल – जल निकास व ठोस कचरा निस्तारण एवं प्रबंधन :–

चूरू में मल–जल निकास की कोई ठोस व्यवस्था नहीं है। वर्षा के पानी के निकास के लिए नालियों का उचित प्रावधान नहीं है। जिससे वर्षा के मौसम में पानी इधर–उधर सडको पर भरा रहता है, तथा यातायात में बाधा आती रहती है। नगरपरिषद के कुछ स्थानों पर नालियों का निर्माण करवाया गया है, परन्तु अभी भी सीवरेज प्रणाली की व्यवस्था नहीं है। शहर के अधिकांश मकानों में सैप्टिक टैक या सोक पिट की व्यवस्था उपलब्ध है। स्वच्छ शहर के लिये सीवरेज प्रणाली की आवश्यकता है। चूरू में सीवरेज कार्य की अभी शुरूआत की गई है। चूरू कस्बे में ठोस कचरा प्रबंधन हेतु लगभग 8 एकड भूमि राजगढ रोड पर लगभग 5 किमी दूरी पर स्थल आरक्षित कर ठोस कचरा प्रबंधन हेतु उपयोग में लिया जा रहा है।

2.6.6 (द–3) विद्युत आपूर्ति :–

चूरू में विद्युत आपूर्ति जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड द्वारा उपलब्ध कराई जाती है। शहर में कुल 1.40 लाख युनिट प्रतिदिन बिजली की आपूर्ति होती है। जो कि 132 केवी जी.एस.एस. चूरू से होती है। यहॉ प्रतिदिन 1.03 लाख यूनिट बिजली खपत है जबकि बढती

जनसंख्या एवं बढते क्रियाकलापों के लिए अधिक बिजली की आवश्यकता है। चूरू की विद्युत आपूर्ति को तालिका संख्या –7 में दर्शाया गया है :–

तालिका –7

विद्युत आपूर्ति चूरू–2010

क्रमांक	**उपयोग**	**कनेक्शनों की संख्या**
1	घरेलू	16103
2	औद्योगिक	390
3	सडकों की रोशनी	31
4	अन्य	3176
	कुल	**19700**

स्त्रोत – राज्य विद्युत वितरण निगम –चूरू

2.6.6 (य) श्मशान एवं कब्रिस्तान :–

चूरू में श्मशान एवं कब्रिस्तान वर्तमान में शहर के अदरूनी हिस्सों में आने लग गये है, क्योंकि पूर्व में जब श्मशान एवं कब्रिस्तान स्थल निर्धारित किये गये थे उस समय शहर की जनसंख्या कम थी शहर का विकास नहीं हुआ था। वर्तमान में शहर के उत्तर, दक्षिण, पूर्व व पश्चिम चारों तरफ श्मशान भूमि स्थित है। वर्तमान में कस्बे में लगभग 90 एकड भूमि श्मशान व कब्रिस्तान हेतु आरक्षित है।

2.6.7 परिसंचरण :–

परिसंचरण में यातायात व्यवस्था, बस तथा ट्रक टर्मिनल एवं रेल सेवा सम्मिलित की जाती है जिसके अन्तर्गत चूरू में लगभग 280 एकड भूमि उपयोग में आ रही है, जो विकसित क्षेत्र का लगभग 11.58 प्रतिशत है।

2.6.7 (अ) यातायात व्यवस्था :–

शहर की सडकें ज्यामितीय आकार में नहीं है। शहर के पुराने भाग तथा आसपास के क्षेत्र में सडकें बहुत संकरी है, जो कि यातायात की समस्या पैदा कर रही है। शहर के वाणिज्यिक क्षेत्र तथा गुदडी बाजार, कटला बाजार, उतरादा बाजार एवं घंटाघर बाजार में सडकों को चौडा करना असंभव हो गया है। यहॉ पर सडके 10''25' की ही चौडाई उपलब्ध

है। जयपुर रोड, झुन्झनु रोड, रतनगढ रोड एवं भालेरी रोड के बाहर की तरफ सडकें 80'–100' चौडी उपलब्ध है। शहर में आंतरिक भागों में अतिक्रमण हा चूके है। पुराने आवासीय क्षेत्रों में निर्माण सघनता से हुआ है, तथा नई कॉलोनियों में सैटबैक आदि का काफी हद तक ध्यान रखा गया है। औद्यौगिक एवं वाणिज्यिक क्षेत्रों में सडकों पर कब्जे पर उनकी वास्तविक चौडाई कम कर दी गई है, जिनकी वजह से यहॉ पर सुगम यातायात के दृष्टिकोण से काफी समस्या रहती है। पुराने एवं अनाधिकृत रूप से बस्तीयों में पार्किंग का अभाव है।

2.6.7 (ब) बस तथा ट्रक टर्मिनल

चूरू शहर में एक पुराना बस स्टैण्ड है जो रेलवे स्टेशन के सामने स्थित है। दुसरा बस स्टैण्ड शहर के पश्चिम में सैनिक कल्याण बोर्ड से आगे स्थित है। जहॉ से काफी समय से बसों का संचालन किया जा रहा है। लेकिन बढते यातायात की समस्या के निराकरण हेतु मास्टर प्लान में और दो बस स्टैण्ड तथा यातायात नगर की सुविधा प्रदान करने की आवश्यकता है।

2.6.7 (स) रेल एवं हवाई सेवा :–

चूरू में पहले मीटरगेज रेलवे स्टेशन था लेकिन अब यह ब्रॉडगेज हो गया है तथा महत्वपूर्ण शहरों यथा जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, श्रीगंगानगर तथा दिल्ली से भली भांति जुडा हुआ है। रेलवे स्टेशन दक्षिण की तरफ स्थित इसी तरह चूरू सडको से सभी महत्वपूर्ण शहरों से जुडा हुआ है। यहॉ पर अभी हवाई यातायात सुविधा उपलब्ध नहीं है।